

इवान (I) पैट्रोविच (P) पाव्लव

निवासी- रूस

सिद्धान्त के प्रतिपादक-

अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त



मनोवैज्ञानिक - I.P. पाव्लव

उपनाम-

- * शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त
- * क्लासिकल सिद्धान्त | क्लासिकल अनुबंधन
- * अनुबंधित अनुक्रिया का सिद्धान्त
- * सम्बन्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त
- * अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धान्त
- * अस्वभाविक अनुक्रिया का सिद्धान्त

अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धान्त-

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1904 में I.P. पाव्लव ने किया था। उन्होंने कुत्ते के ऊपर प्रयोग किया था। उन्होंने प्रयोग के प्रारम्भ में कुत्ते को कई दिनों तक खाने के साथ घंटी बजाकर खाना दिया। यह प्रयोग कई दिनों तक दोहराने पर पाया गया कि खाना एवं घंटी में सम्बन्ध उत्पन्न हो जाता है। और स्वाभाविक क्रिया लार टपकना होती है।

इसके बाद केवल घंटी बजाई परन्तु खाना नहीं दिया तो देखा गया कि कुत्ता स्वाभाविक क्रिया (लार टपकना) करता है।

1. अनुकूलन से पूर्व 2. अनुकूलन के दौरान 3. अनुकूलन के बाद

स्वाभाविक उद्दीपक (भोजन)

स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)

अस्वाभाविक उद्दीपक (घंटी)

+ स्वाभाविक उद्दीपक (भोजन)

स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)

अस्वाभाविक उद्दीपक (घंटी)

स्वाभाविक अनु-

(लार)

शैक्षिक महत्व

- * भय निवारण में सहायक
- * सामाजीकरण में सहायक
- * अनुशासन विकसित करने में सहायक
- * गति शिक्षण में सहायक
- * स्वभाव व आदत निर्माण में सहायक

By-MOHIT TEZZA

बुरहस (B) फ्रेडरिक (F) स्किनर



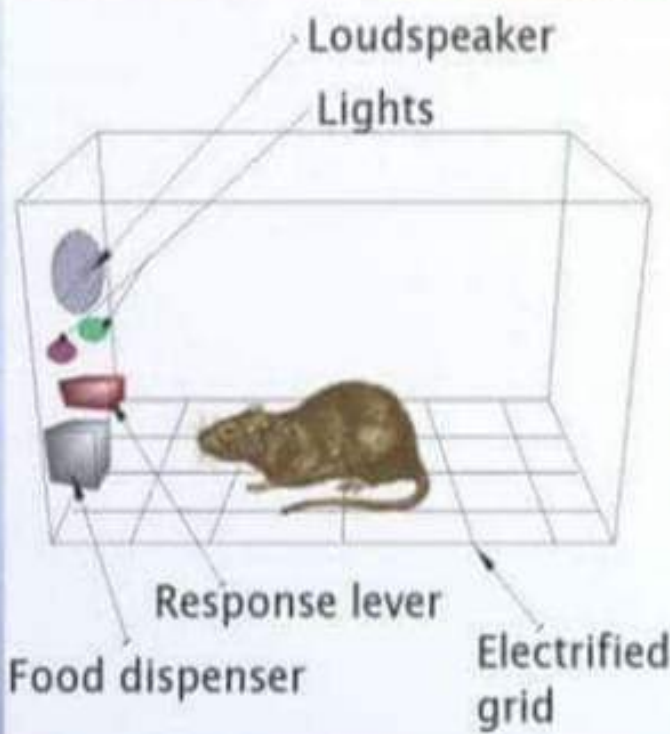
B.F. SKINNER

निवासी- अमेरिका

सिद्धान्त के प्रतिपादक - क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त -

- उपनाम -
- * सक्रिय अनुबन्धन सिद्धान्त
 - * अनुक्रिया उद्दीपन सिद्धान्त
 - * कार्यात्मक प्रतिबद्धता सिद्धान्त
 - * साधनात्मक अनुबन्ध
 - * स्किनर बॉक्स प्रयोग
 - * R-S थ्योरी

क्रिया-प्रसूत / सक्रिय अनुबन्धन सिद्धान्त



इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1930 में B.F. स्किनर ने किया था।

उन्होंने सफेद चूहे (1930) और कबूतर (1943) पर प्रयोग किया। यह सिद्धान्त थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम पर आधारित है। इसमें उन्होंने स्किनर बॉक्स में भूखे चूहे को बन्द किया। बॉक्स की दीवार पर एक लीवर लगा होता है जिसका सम्बन्ध बॉक्स पर लगे भोजन से होता है। उस बॉक्स में चूहे द्वारा कई बार अनुक्रिया की जाती है। संयोग से चूहे का पंजा उस लीवर पर पड़ जाता है और बॉक्स पर लगे भोजन प्राप्त से भोजन मिल जाता है।

धीरे-धीरे चूहे द्वारा लीवर दबाने में कम समय लगाने लगता और एक समय ऐसा आता है कि चूहा जब भी बॉक्स में होता है वह बिना किसी गलती के लीवर को दबाता है और भोजन प्राप्त करता है। इस तरह चूहे ने बॉक्स में लीवर दबाने की अनुक्रिया को सीख लिया है।

स्किनर ने 1943 में चूहे जैसा ही प्रयोग कबूतर पर भी किया। इस सिद्धान्त में स्किनर ने S-R (थॉर्नडाइक) को R-S में बदल दिया। इसमें पहले अनुक्रिया की जाती फिर बाद में पुनर्बलन (भोजन) मिलता है।

शैक्षिक महत्व * इस सिद्धान्त के द्वारा बालक में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन किया जा सकता है।

* वांछित अनुक्रियाओं के पुनर्बलीकरण से बालक को प्रोत्साहन मिलता है और वे उचित व्यवहार करने लगते।

* क्रिया के अनुसार सकारात्मक व नकारात्मक पुनर्बलन तुरन्त देना चाहिए क्योंकि कि देर करने से इसका प्रभाव कम हो जाता है।

By. MOHIT TEZZA

थार्नडाइक के सीखने के नियम



- * प्रतिपादक - थॉर्नडाइक
- * निवासी - U.S.A
- * प्रयोग - विल्ली पर (भूखी)
- * उद्दीपक - मांस/महली का टुकड़ा
- * उपनाम -
 - * प्रयास एवं भुटि का सिद्धांत
 - * प्रयत्न एवं भूल का सिद्धांत
 - * आवृत्ति (बार-बार) का सिद्धांत
 - * उद्दीपक-अनुक्रिया का सिद्धांत
 - * S-R BOND का सिद्धांत
 - * सम्बन्धवाद का सिद्धांत
 - * अधिगम का बन्ध सिद्धांत

थार्नडाइक के नियम

थार्नडाइक ने सीखने के कुल आठ नियम दिए

तीन मुख्य नियम दिए

1. तत्परता का नियम
2. अभ्यास का नियम
3. प्रभाव/संतोष/असंतोष का नियम

5 गौड़/सहायक नियम दिए

1. बहुप्रतिक्रिया का नियम
2. मनोवृत्ति का नियम
3. आंशिक क्रिया का नियम
4. आत्मीकरण का नियम
5. सम्बन्धित परिवर्तन का नियम

1. तत्परता का नियम - कार्य को करने के लिए तत्पर हो तो जल्दी कर पाओगे।

2. अभ्यास का नियम -

- * उपयोग का नियम - यदि कोई कार्य पहले किया है और अब उसे दुबारा करे तो पुनः मस्तिष्क में आ जाता है।
- * अनुपयोग का नियम - यदि किसी क्रिये हुए कार्य को पुनः नहीं करते हैं तो मस्तिष्क भुला देता है।

3. संतोष का नियम - यदि किसी कार्य को करने पर हमें संतोष प्राप्त होता है तो हम उसे दोबारा करेंगे। यदि असंतोष होता है तो दोबारा नहीं करेंगे।

शैक्षिक महत्व

- * बड़े व मंदबुद्धि के लिए उपयोगी
- * जिज्ञा के प्रति रुचि
- * सफलता के प्रति आशा

1. मनोवृत्ति का नियम - किसी कार्य को जिस मनोवृत्ति से करेंगे वैसा ही फल मिलेगा।

2. आंशिक क्रिया का नियम - किसी कार्य को छोटे-2 भागों में बाँट कर किया जाता है तो जल्दी सफलता मिलती है।

3. आत्मीकरण का नियम - नया कार्य करने पर पुराने कार्य को न भूलें।

पुनर्बलन का सिद्धान्त / हल का सिद्धान्त



- ☞ प्रतिपादक - C.L. हल
- ☞ निवासी - U.S.A
- ☞ प्रयोग - बिल्ली / चूहा (थॉर्नडाइक यद्धति पर आधारित)
- ☞ यह सिद्धान्त आवश्यकता पर बल देता है।
- ☞ उपनाम
 - * प्रबलन का सिद्धान्त
 - * सबलीकरण का सिद्धान्त
 - * चालक-न्यूनता का सिद्धान्त
 - * क्रमबद्ध अधिगम का सिद्धान्त
 - * सतत अधिगम का सिद्धान्त
 - * यथार्थ अधिगम का सिद्धान्त
 - * अन्तर्नेद-न्यूनता का सिद्धान्त

पुनर्बलन का सिद्धान्त



C.L. हल ने यह सिद्धान्त थॉर्नडाइक व पाव्लोव यद्धति पर दिया यह सिद्धान्त आवश्यकता पर बल देता है। हल के अनुसार सीखना आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया द्वारा होता है। हल ने इस सिद्धान्त में बताया कि कोई भी प्राणी उसी कार्य को सीखता है जिसमें उसकी किसी आवश्यकता की पूर्ति हो।



- ☞ स्किनर ने इस सिद्धान्त को अधिगम का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त बताया है।

शैक्षिक महत्व-

- * बालकों को प्रेरित किया जाता है।
- * उद्देश्य व लक्ष्य स्पष्ट होते हैं।
- * छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए।
- * यह सिद्धान्त सीखने में प्रेरणा पर बल देता है।

अल्बर्ट बान्डूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त



- प्रतिपादक - अल्बर्ट बान्डूरा
- निवासी - कनाडा
- सिद्धान्त दिया - 1917 में
- प्रयोग - बोबी डॉल, जीवित धोकर (फिल्म)
- इस सिद्धान्त में अनुकरण द्वारा सीखा जाता है।

सामाजिक अधिगम का अर्थ- दूसरों को देखकर उनके अनुरूप व्यवहार करने के कारण व दूसरों के व्यवहार को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को धारण करने तथा अमान्य व्यवहारों को त्यागने का कारण ही सामाजिक अधिगम कहलाता है।

सामाजिक अधिगम सिद्धान्त-

Bobo Doll Experiment



इस प्रयोग में बान्डूरा ने बच्चों को 5 मिनट की फिल्म दिखाई। फिल्म में एक कमरे में बहुत से खिलौने रखे थे। उन खिलौनों में एक बोबी डॉल (बड़ा गुड़ड़ा) रखा था। एक बालक कमरे में प्रवेश करता है और खिलौनों के प्रति क्रोध प्रकट करता है और एक खिलौने के प्रति आक्रामक हो जाता है। यहाँ तक का भाग सभी बालकों को दिखाया गया। उसके बाद बालकों को तीन समूह में बाँट दिया गया। पहले समूह को उसके आगे की फिल्म दिखाई गई जिसमें उस बालक को क्रोध के लिए दण्डित किया गया। दूसरे समूह को आगे दिखाया गया कि क्रोध के बदले बालक को पुरस्कार दिया गया। तीसरे समूह को दिखाया गया कि उस बालक को न दण्ड मिला न पुरस्कार। फिल्म दिखाने के बाद सभी बच्चों को खिलौनों के साथ एक कमरे में बिठाया गया और उसका निरीक्षण किया गया तो पाया कि जिन बच्चों ने खिलौने के प्रति आक्रामक व्यवहार के प्रति पुरस्कार वाली फिल्म देखी उन बच्चों ने खिलौने के प्रति आक्रामकता दिखाई। और जिन्होंने दण्डित करने वाली देखी उन्होंने कम आक्रामकता दिखाई।

शैक्षिक महत्व-

- * शिक्षक हाज़ी के सामने आदर्श व्यवहार वाले मॉडल प्रस्तुत करें।
- * बुरे व्यवहार उपस्थित न होने दें।
- * स्वनिर्णय की विधि अपनायें।
- * शिक्षक विश्वास दृढ़ करने वाले संदेश देकर व अन्य व्यक्तियों की सक्षमता दिखाकर हाज़ी में स्व प्रभावशीलता का विकास कर सकते हैं।

बान्डूरा ने अनुकरण के चार चरण बताये

1. अवधान (Attention) 2. धारणा 3. पुनः प्रस्तुतीकरण 4. पुनर्वसन

बान्डूरानुसार व्यक्ति स्वयं की क्रियाओं को तीन तरीकों से संकलित कर सकता -

1. स्वनिर्णय 2. स्वनिर्देशन 3. स्वपुनर्वसन

कोहलर का अन्तःदृष्टि या सूझ का सिद्धान्त



M. Wertheimer

K. Kohler

W. Kohler

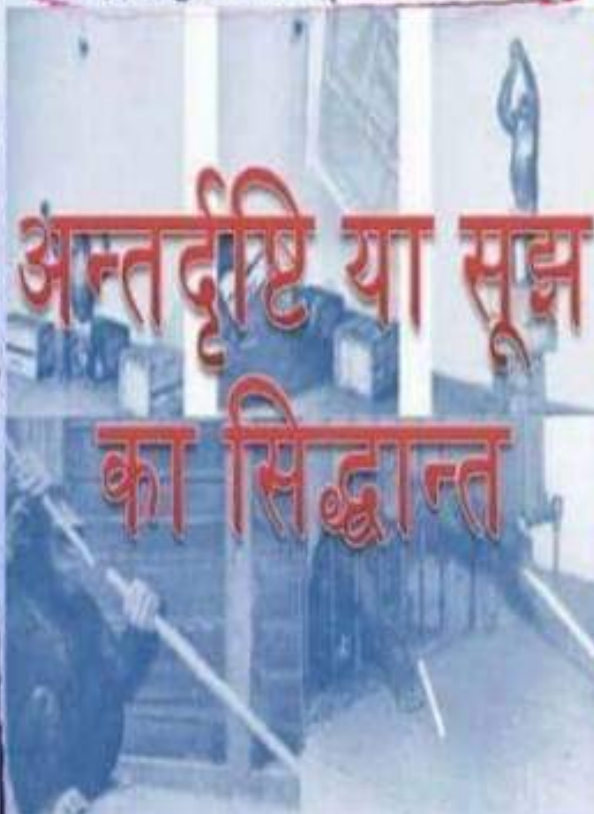
मनोवैज्ञानिक

"कोहलर"

निवासी - जर्मनी

- प्रतिपादक - मैक्स वर्दीमर
- प्रयोगकर्ता - कोहलर
- प्रयोग किया - चिम्पांजी / बनमानुस / सुल्तान
- सहयोगकर्ता - कोष्का
- उपनाम - सीखने का गेस्टाल्ट सिद्धान्त

अन्तःदृष्टि या सूझ का सिद्धान्त



अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को गेस्टाल्ट सिद्धान्त भी कहते हैं। इसके अनुसार व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण परिस्थिति को अपनी मानसिक शक्ति से अच्छी तरह सीख लेता है।

कोहलर का प्रयोग- कोहलर ने एक भूखे चिम्पांजी को एक कमरे में बंद किया। कमरे की छत से कुछ केले इस प्रकार टोंग दिये जो उसकी पहुँच से बाहर थे। कमरे में कुछ दूरी पर 3-4 खाखी बॉम्ब रख दिये थे। चिम्पांजी ने उड़ल कर केले लेने का प्रयास किया पर सफल नहीं हुआ। कुछ समय बाद उसने खाखी बॉम्बों को देखकर उन्हें केले के नीचे रखकर उस पर चढ़ गया और केले प्राप्त कर लिए। यह उसकी सूझ ही है जिसने उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता दी। चिम्पांजी के समान बालक भी सूझ द्वारा सीखते हैं।

कोहलर ने निष्कर्ष निकाला- जीव सम्पूर्ण वातावरण का प्रत्यक्षीकरण करता है और उसके आधार पर उसमें सूझ उत्पन्न होती है इससे वह अपनी समस्या का समाधान करना सीख लेता है।

संक्षेप में- क्षेत्र का प्रत्यक्षीकरण होना तथा उस क्षेत्र का पुनः संगठन करना ही सूझ या अन्तःदृष्टि है।

शैक्षिक महत्व- समस्या समाधान आवांशित शिक्षा

- * लक्ष्य प्राप्ति में सहायक
- * स्वयं खोजकर सीखना
- * रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोगी
- * समस्या पर अधिक बल देता है
- * तर्क-विवेचन की क्षमता उत्पन्न करना
- * बालक के सामने स्पष्ट लक्ष्य प्रस्तुत करना चाहिए।

TBY-MOHITTEZZAS

कौहलर का अन्तःदृष्टि या सूझ का सिद्धान्त



H. Wertheimer

K. Koffka

W. Kohler

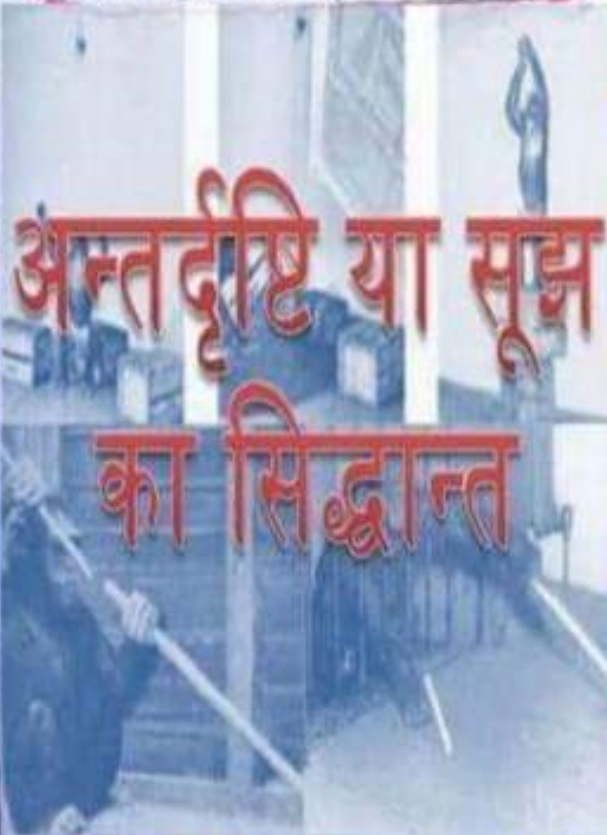
मनोवैज्ञानिक

"कौहलर"

निवासी - जर्मनी

- प्रतिपादक - मैक्स वर्दीमर
- प्रयोगकर्ता - कौहलर
- प्रयोग किया - चिम्पांजी / बनमानुस / सुल्तान
- सहयोगकर्ता - कोष्का
- उपनाम - सीखने का गेस्टाल्ट सिद्धान्त

अन्तःदृष्टि या सूझ का सिद्धान्त



अन्तःदृष्टि या सूझ का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को गेस्टाल्ट सिद्धान्त भी कहते हैं। इनके अनुसार व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण परिस्थिति को अपनी मानसिक शक्ति से अच्छी तरह सीख लेता है।

कौहलर का प्रयोग - कौहलर ने एक भूखे चिम्पांजी को एक कमरे में बंद किया। कमरे की छत में कुछ केले इस प्रकार टोंग दिये जो उसकी पहुँच से बाहर थे। कमरे में कुछ दूरी पर 3-4 खाँसी बोम्ब रख दिये थे। चिम्पांजी ने उड़ल कर केले लेने का प्रयास किया पर सफल नहीं हुआ। कुछ समय बाद उसने खाँसी बोम्बों को देखकर उन्हें केले के नीचे खींचकर उस पर चढ़ गया और केले प्राप्त कर लिए। यह उसकी सूझ ही है जिसने उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता दी। चिम्पांजी के समान बालक भी सूझ द्वारा सीखते हैं।

कौहलर ने निष्कर्ष निकाला - जीव सम्पूर्ण वातावरण का प्रत्यक्षीकरण करता है और उसके आधार पर उसमें सूझ उत्पन्न होती है इससे वह अपनी समस्या का समाधान करना सीख लेता है।

संक्षेप में - क्षेत्र का प्रत्यक्षीकरण होना तथा उस क्षेत्र का पुनः संगठन करना ही सूझ या अन्तःदृष्टि है।

शैक्षिक महत्व - समस्या समाधान आधारित शिक्षा

- * लक्ष्य प्राप्ति में सहायक
- * स्वयं खोजकर सीखना
- * रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोगी
- * समझ पर अधिक बल देता है
- * तर्क-विवेचन की क्षमता उत्पन्न करना
- * बालक के सामने स्पष्ट लक्ष्य प्रस्तुत करना चाहिए।

TBY-MOHITTEZZAS

जीन पियाजे का संज्ञानवादी सिद्धान्त

Jean Piaget



निवासी - स्विट्जरलैंड

(पियाजे ने मानव संज्ञान विकास को 4 अवस्थाओं में बाँटा)

1. संवेदी पेशिय अवस्था
(0 से 2 वर्ष)

3. मूर्त संक्रियात्मक
(7-12 वर्ष)

2. पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(2 से 7 वर्ष)

4. औपचारिक/अमूर्त
(12 से 15)

1. संवेदी पेशिय/इन्द्रिय जनित अवस्था - (0 से 2 वर्ष)



- * शिशु अपनी संवेदनाओं व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखता है।
- * वह वस्तुओं को देखकर, सुनकर, स्पर्श करके ज्ञान ग्रहण करता है।
- * इस अवस्था में शिशु अपने हाथ-पैर चलाना व खेलना सीख जाता।

2. पूर्व संक्रियात्मक / पूर्व वैचारिक अवस्था - (2 से 7 वर्ष)

- * शिशु दूसरों के सम्पर्क से, खेलों व अनुकरण के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।
- * शिशु अक्षर लिखना, गितती गाना, रंगों की पहचानना आदि सीख लेता है।

3. मूर्त संक्रियात्मक / वैचारिक / चिन्तन की तैयारी का काल - (7 से 12 वर्ष)

- * इस अवस्था में चिन्तन की शुरुआत हो जाती है लेकिन उसका चिन्तन मूर्त (प्रत्यक्ष) वस्तुओं तक ही सीमित रहता है।
- * बालक अन्तर करना, तुलना करना, दिन, तारीख आदि बताने में योग्य हो जाता है।

4. औपचारिक/अमूर्त/तार्किक अवस्था - (12 से 15 वर्ष)

- * इस अवस्था में किशोर मूर्त के साथ-साथ अमूर्त चिन्तन करने के योग्य हो जाता है।
- * इस अवस्था में चिन्तन, कल्पना, निरीक्षण, समस्या समाधान करना आदि मानसिक योग्यताओं का विकास हो जाता है।

By: Mohit Tezra